मृच्छकटिकम्

Name :- Sovi kumari
class :- B.A II year
Debtt :- Sanskrit

वसन्तसेना का चरित्र चित्रण

मृच्छकटिकम् में दो प्रकार के नायिकाओं का वर्णन किया गया है जिसमें कुलस्त्री है धूता और गणिका वसन्तसेना है। इनमें वसन्तसेना का चरित्र मुख्य रूप से चित्रित किया गया है।

वसन्तसेना उज्जयिनी की एक वैभवशालिनी गणिका है। उसकी समृद्धि को देखकर विदूषक कह भी उठता है — 'किं तावद् गणिकागृहम् अथवा कुबेर-भवन परिच्छेद इति'। वह सुन्दरी तरुणी है और उज्जयिनी नगरी का भूषण है — 'आर्या स्त्रियं च नगरस्य विभूषणं च'। वसन्तसेना नारीचरित्र की दृढ़ता का एक प्रतीक है। सत्य और विशुद्ध प्रेम का एक प्रतिमूर्ति है। अपूर्वत्याग और गुणस्पृहा की आग में निरन्तर जलकर, गणिकावृत्ति के कालुष्य को जलाकर, भास्वर सोने की तरह चमकता एक नारी रत्न है। वह अति सम्पन्न प्रभावशाली राजश्यालक शकार जैसे अनुरक्त राजवल्लभ को अपनी माँ की प्रेरणा के बावजूद ठुकराकर निर्धन चारुदत्त के प्रति अपनी हार्दिक आसक्ति अभिव्यक्त कर शुद्ध एवं गम्भीर प्रेम का परिचय देती है। गणिकावृत्ति से ही उसकी माँ ने अपार समृद्धि अर्जित की है, किन्तु वसन्तसेना का कोमल एवं सात्विक हृदय इस विपुल वैभव के प्रति विद्रोह करता है। वह अपने गणिका के गर्हित जीवन को छोड़कर इस अपार सम्पदा को ठुकराकर शुद्धाचारी गृहस्थ,

अभिजात कुलोत्पन्न, दरिद्र किन्तु स्वाभिमानी, सुशील एवं सुन्दर युवा चारुदत्त को मन ही मन अपना सर्वस्व मानकर हृदय से स्वीकार कर लेती है।

वसन्तसेना अत्यन्त उदार हृदय वाली नारी है।

जब संवाहक उसकी शरण में आता है तो आश्रित होने पर भी वह उसे अभयदान देती है। वह उसे ऋण मुक्त कराने के लिए अपना स्वर्णाभूषण दे देती है और कहला देती है कि संवाहक ने ही ऐसा है—आपकी दशा के कारण ही वह मदनिका को दासता से मुक्त कर देती है तथा मदनिका से कहती है— 'अपि मया त्वं विनापि सर्वं परिजनमनुज्ञातं करिष्यामि।'

चारुदत्त के पुत्र रोहसेन को रोते हुए देखकर वह सुवर्ण-शकट बनवाने के लिए अपने आभूषण दे देती है। चारुदत्त की पत्नी धूता के प्रति उसे ईर्ष्या नहीं है, वह उसके द्वारा लौटाई गई रत्नावली लौटा देती है और कहती है—

'अहं श्रीचारुदत्तस्य गुणनिर्जिता दासी तदा युष्माकमपि।'

वसन्तसेना के शालीन एवं मनोमुग्धकारी व्यवहार के कारण ही वसन्तसेना के विरुद्ध विट का व्यवहार सर्वथा परिवर्तित हो जाता है। वसन्तसेना को परेशान करने के अपेक्षा अब वह उसका सहयोगी बन जाता है।

कामं प्रदोषतिमिरेण न दृश्यसे त्वं सौदामिनीव जलदोदरसन्धिलीना।
त्वां सूचयिष्यति तु माल्यसमुद्भवोऽयं गन्धश्च भीरु मुखराणि च नूपुराणि॥

अपने मधुर, शुद्ध और पवित्र प्रणय से अन्त में चारुदत्त के हृदय को अपनी ओर आकृष्ट करने में सफल हो जाती है। गणिका होते हुए भी इसका व्यवहार तथा प्रेम कुलनारी के सदृश है — [illegible]

इसने अपने अनन्य प्रेम, उदात्त चरित्र, उदार हृदय तथा अपूर्व त्याग आदि गुणों से गणिका होने की कालिमा को प्रक्षालित करके एक साध्वी नारी के पद को अलंकृत किया है।